मुक्त हो जाता है। इसलिए हे अर्जुन! इस भक्तियोग के लिए प्रयत्न कर, क्योंकि यही कर्म-कौशल है।।५०।।

तात्पर्य

जीवात्मा अनादि काल से पाप-पुण्य रूपी कर्मबन्धनों का संचय कर रहा है। इस कारण अपना यथार्थ स्वरूप उसे सदा अज्ञात ही बना रहता है। इस अज्ञान को भगवद्गीता के उपदेश से हटाया जा सकता है। गीता जीव को पूर्ण रूप से श्रीकृष्ण के शरणागत होकर कर्मबन्धन रूपी शृंखला के द्वारा जन्म-जन्मान्तर में निरन्तर मिलने वाली पीड़ा से मुक्त हो जाने की शिक्षा देती है। अतएव अर्जुन को कृष्णभावनाभावित कर्म करने को कहा गया है, क्योंकि केवल यही पद्धति कर्मबन्धन से मुक्तिकारक है।

17.2

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम्।।५१।।

कर्मजम्=सकाम कर्म से उत्पन्न होने वाले; **बुद्धियुक्ताः**=बुद्धियोग से युक्त; **हि**=निश्चित रूप से; **फलम्**=फल को; **त्यक्त्वा**=त्याग कर; **मनीषिणः**=भक्त-महर्षि; **जन्मबन्ध**=जन्म-मृत्यु के बन्धन से; **विनिर्मुक्ताः**=मुक्त हुए; **पदम्**=परम पद को; **गच्छन्ति**=प्राप्त करते हैं; **अनामयम्**=दुःखरहित।

अनुवाद

भक्तियोग के परायण विवेकी पुरुष श्रीभगवान् की शरण ले लेते हैं और संसार में ही कर्मफल को त्याग कर जन्म-मृत्यु के चक्र से सदा के लिए मुक्त हो जाते हैं। इस प्रकार उन्हें उस अनामय पद की प्राप्ति होती है, जो सब दुःखों से परे है।।५१।।

तात्पर्य

मुक्त जीवात्मा उस अनामय पद की इच्छा रखते हैं, जहाँ प्राकृत दुःखों का सर्वथा अभाव है। श्रीमद्भागवत (१०.१४.५८) में कथन है:

समाश्रिता ये पदपल्लवप्लवं महत्पदं पुण्ययशो मुरारेः।
भवाम्बुधिर्वत्सपदं परं पदं पदं पदं यद्विपदां न तेषाम्।।

"जिसने जगदाश्रय श्रीमुकुन्द के चरणारविन्द रूपी तरणी का आश्रय ग्रहण कर लिया है, उस के लिए संसार-सागर तरने को वत्सपद के समान सुगम हो जाता है। उसका लक्ष्य वह परम पद वैकुण्ठ है जहाँ प्राकृत-जगत् का कोई भी दुःख नहीं है, ऐसा स्थान नहीं कि जहाँ पद-पद पर संकट हो।"

अज्ञानवश मनुष्य नहीं समझता कि यह संसार वास्तव में अत्यंत घृणास्पद एवं दुःखदायी स्थान है, क्योंकि यहाँ पद-पद पर भय की ही प्राप्ति होती है। अज्ञानी मनुष्य यह सोचकर सकाम कर्मों में लगे रहते हैं कि उनके फलस्वरूप वे सुखी हो जायेंगे। वे यह नहीं जानते कि ब्रह्माण्ड के किसी भी भाग में, किसी भी प्रकार की देह में दुःखरहित जीवन नहीं मिल सकता। जन्म, मृत्यु, जरा और व्याधि—जीवन